● सुनो, पढ़ो और लिखो :

5NKLV9

११. सुनहरे हिमालय के दर्शन

–श्रीमती रंजना अजय

जन्म : २५ अक्टूबर १९७३ **रचनाएँ :** 'सांझ' (मराठी यात्रा वृत्तांत)
प्रस्तुत यात्रा वर्णन में दार्जिलिंग के प्राकृतिक सौंदर्य से सजे स्थलों का मनोरम वर्णन किया है ।

चिलचिलाती गर्मी और महानगर की आपाधापी से मन ऊबा तो हमारे परिवार ने पूर्वी हिमालय की गोद में बसे दार्जिलिंग यात्रा का मन बनाया । पश्चिम बंगाल के उत्तरी छोर पर स्थित इस मनोरम स्थल तक पहुँचने के लिए दिल्ली से हमें गुवाहाटी रेलमार्ग पर स्थित न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पहुँचना था । न्यू जलपाईगुड़ी से हम सिलीगुड़ी पहुँचे । इसे कई पर्वतीय पर्यटन स्थलों का प्रवेश द्वार कहा जाता है । यहाँ से दार्जिलिंग के लिए टैक्सी, जीप, बस और टॉय ट्रेनें जाती हैं । घुमावदार पहाड़ी मार्ग की यात्रा के लिए 'टॉय ट्रेन' हमें सबसे अच्छा विकल्प लगी और सिलीगुड़ी जंक्शन से अगले दिन सुबह की पहली ट्रेन से हम दार्जिलिंग चल पड़े ।

खिलौना गाड़ी का सफर

लगभग दस किलोमीटर का मैदानी रास्ता तय करने के बाद टॉय ट्रेन पर्वतीय मार्ग पर बढ़ती है । देवदार, ताड़ और बाँस आदि के पेड़ों से भरे इस मार्ग पर इस अनोखी ट्रेन से पर्यटकों को प्रकृति के मनोरम दृश्य देखने का भरपूर आनंद मिलता है । मार्ग में तिनधरिया स्टेशन के पास टॉय ट्रेन एक वृत्ताकार लूप से गुजरती है । कुर्सियांग पहुँचकर तो सब कुछ रेल लाइन के एकदम निकट लगने लगता है । सैलानियों को यह देखकर आश्चर्य होता है कि रेलगाड़ी मानो दुकानों और घरों को छू कर जा रही हो । इस अनोखी खिलौना रेलगाड़ी की शुरुआत १२२ वर्ष पूर्व हुई थी । गहरी घाटियों, दूर तक फैले चाय बागान, कृत्रिम पुलों और छोटी-छोटी सुरंगों को पार करती हुई यह ट्रेन जब 'घूम' स्टेशन पहुँचती है तो पर्यटक रोमांचित हो उठते हैं ।

❑ कथात्मक पद्धति से इस यात्रावर्णन को समझाएँ । यात्रा करने का महत्त्व बताएँ । विद्यार्थियों द्वारा की हुई किसी सैर का वर्णन करने के लिए कहें । सैर पर निकलने से पहले किन-किन वस्तुओं को इकट्ठा करना पड़ता हैं पूछें, सामग्री की सूची बनवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

सैर पर जाने से पूर्व संबंधित स्थल की प्राथमिक जानकारी प्राप्त करो ।

दार्जिलिंग का पुराना नाम दोर्जीलिंग था । सदियों पहले यहाँ एक छोटा-सा गाँव था । चाय के शौकीन अंग्रेजों ने इस क्षेत्र की आबोहवा को चाय की खेती के योग्य पाकर यहाँ चाय बागान विकसित किए ।

एक हिमालय छोटा-सा

'हैप्पी वैली टी इस्टेट' से निकलकर हम हिमालय पर्वतारोहण संस्थान पहुँचे । हिमालय के शिखरों को छू लेने की चाह रखने वालों को यहाँ पर्वतारोहण का प्रशिक्षण दिया जाता है । इसकी स्थापना एवरेस्ट पर पहली विजय के बाद की गई थी । शेरपा तेनसिंह लंबे अरसे तक इस संस्थान के निदेशक रहे । संस्थान में एक महत्त्वपूर्ण संग्रहालय भी है । इसमें पर्वतारोहण के दौरान उपयोग में आने वाले कई नए-पुराने उपकरण, पोशाकें, कई पर्वतारोहियों की यादगार वस्तुएँ और रोमांचक चित्र प्रदर्शित किए गए हैं । इसके निकट ही स्थित है 'पद्‌मजा नायडू हिमालय चिड़ियाघर' जो बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी बहुत पसंद आता है । पर्वतों पर रहने वाले कई दुर्लभ प्राणी यहाँ देखने को मिलते हैं । इनमें खास हैं लाल पांडा, साइबेरियन टाइगर, स्नो ल्योपार्ड, हिमालयी काला भालू आदि ।

सूरज के स्वागत का मजा

अगले दिन बहुत जल्दी उठकर हमें तैयार होना पड़ा क्योंकि मुँह अँधेरे ही हमें दार्जिलिंग से तेरह किलोमीटर दूर 'टाइगर हिल' पहुँचना था । समुद्री तल से ८४८२ फीट की ऊँचाई पर स्थित 'टाइगर हिल' सूर्योदय के अद्‌भुत नजारे के लिए प्रसिद्‌ध है । सुबह चार बजे ही जीप हमारे होटल के सामने आ पहुँची । ठंड से ठिठुरते हुए हम 'टाइगर हिल' की ओर चल पड़े । वहाँ दूर तक जीप और टैक्सियों की कतार लगी थी । वहाँ पहुँचते-पहुँचते पर्यटकों का हुजूम देखकर लगा जैसे पूरा देश ही सूर्य के स्वागत में टाइगर हिल पर आ खड़ा हुआ हो । कंचनजंघा और अन्य हिमशिखरों पर सूर्य की पहली किरण ने अपना नारंगी रंग फैला दिया जो कुछ क्षण बाद ही सुनहरे रंग में परिवर्तित हो गया । सूर्य की किरण कुछ तेज हुई तो ऐसा लगने लगा कि पर्वतों पर चाँदी की वर्षा हो गई हो । जैसे-जैसे सूर्य आगे बढ़ने लगा, सभी हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ दूध-सी सफेद नजर आने लगीं । सूर्योदय के साथ ही पल-प्रतिपल रंग बदलती पर्वतमाला का ऐसा अविस्मरणीय दृश्य देख पर्यटक अवाक रह जाते हैं ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से हिमालय की ऊँची चोटियों के नाम, ऊँचाई आदि की जानकारी प्राप्त करो ।

टाइगर हिल से वापस आते हुए हम 'घूम मॉनेस्ट्री' देखने पहुँचे । यह दार्जिलिंग का एक प्रसिद्‌ध और सुंदर बौद्‌धमठ है । यहाँ स्थापित मैत्रेयी बुद्‌ध की ऊँची, सुनहरी प्रतिमा अत्यंत मनभावन है । इस प्राचीन मठ में कई दुर्लभ पांडुलिपियों और बौद्‌धग्रंथों का संग्रह है । मठ से कुछ ही दूरी पर बतासिया लूप में युद्‌ध स्मारक भी है । यह स्मारक शहीद सैनिकों की याद में बनवाया गया था । मार्ग में हमने प्रसिद्‌ध आवा गैलरी देखी और धीरधाम मंदिर के दर्शन भी किए ।

मिरिक से कलिपोंग तक का मनोहारी रास्ता हमने टैक्सी से तय किया । रास्ते में तिस्ता नदी की खूबसूरती ने हमें बहुत प्रभावित किया । तिस्ता पुल पार करके टैक्सी फिर ऊपर की ओर बढ़ने लगी । रास्ते में एक जगह टैक्सी

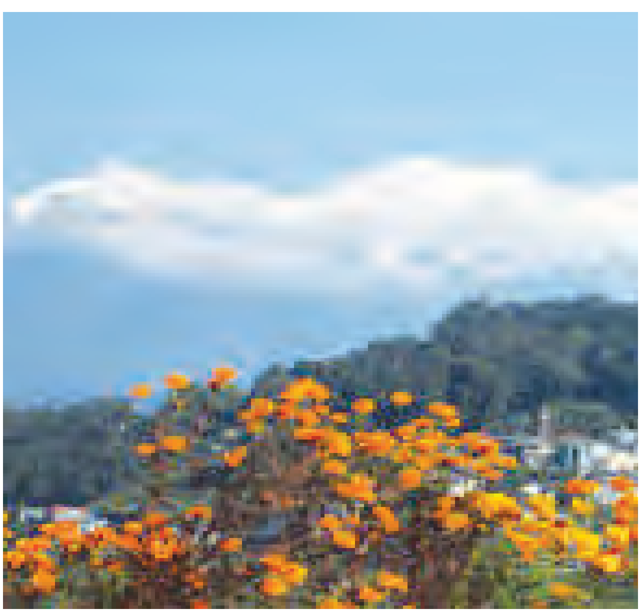

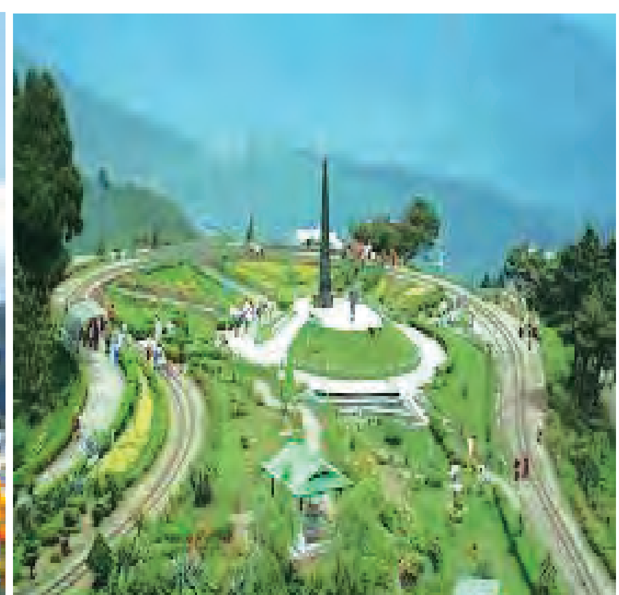

रोक कर ड्राइवर ने हमें एक प्राकृतिक दृश्य देखने को कहा । वहाँ से हमें तिस्ता और अन्य नदियों के संगम का अनुपम दृश्य देखने को मिला । विभिन्न दिशाओं के पहाड़ों से उतरती ये नदियाँ एक-दूसरे में आ समाती हैं । यहाँ पहाड़ी शहर गंगटोक में पर्यटकों को सिक्किमी, भूटानी और तिब्बती संस्कृति का मिला-जुला रूप देखने को मिलता है ।

देखने के लिए यहाँ पर्यटकों को योग्सा मठ, फो ब्रांग मॉनेस्ट्री, थार्पा चाओलिंग मॉनेस्ट्री, ग्राहम होम्स और चर्च हैं । फूल प्रेमियों के लिए तो यह जगह स्वर्ग ही है । अनुकूल जलवायु के कारण यहाँ फूलों की खेती की जाती है । इसे भारत का हॉलैंड कहना गलत न होगा। यहाँ सैकड़ों नर्सरियाँ हैं । यहाँ तरह-तरह के फूल, ऑर्किड और कैक्टस देखने योग्य होते हैं । पर्यटक कुछ खास नर्सरियाँ देखने जरूर जाते हैं ।

कलिंपोंग भ्रमण के साथ ही हमारी पर्वतीय त्रिकोण की यह यात्रा पूरी हो चली थी। प्रकृति से भरपूर इन स्थानों की यात्रा में हमने कंचनजंघा के पावन हिमशिखर, हरियाली से सटे हुए ढलान, कल-कल करते झरने, उलझे हुए पहाड़ी रास्ते, बलखाती नदियाँ, आस्था जगाते गोंपा और विश्व धरोहर टॉय ट्रेन इन सबको मन में छवि रूप में अंकित कर लिया । इससे यह एक अविस्मरणीय यात्रा बन गई ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

चिलचिलाती = चमकती

आपाधापी = भागदौड़

सैलानी = घूमने वाला

हुजूम = भीड़

पांडुलिपि = पुस्तक की हस्तलिखित प्रति

दुर्लभ = कठिनता से प्राप्त होने वाला

धरोहर = थाती, अमानत

अध्ययन कौशल

भारत के मानचित्र में प्रमुख पर्वत दर्शाओ ।

विचार मंथन

।। असफलता सफलता की पहली सीढ़ी है ।।

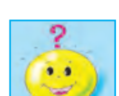

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि देश की सीमा पर सैनिक न होते तो....

सदैव ध्यान में रखो

प्रदूषण की रोकथाम ही प्राकृतिक सुंदरता को अक्षुण्ण रखती है ।

सुनो तो जरा

कोई एक प्रहसन सुनो और उसके किसी एक पात्र के संवाद को सुनाओ ।

बताओ तो सही

हिमालय के लिए विशेषण बताओ और लिखो ।

वाचन जगत से

किसी पर्वतारोही के संस्मरण पढ़ो और सुनाओ ।

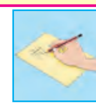

मेरी कलम से

'हिमालय से देश की सीमा सुरक्षित है' इस विषय पर दस-बारह वाक्य लिखो ।

* चार-पाँच पंक्तियों में उत्तर लिखो ।

१. पर्यटक कब रोमांचित हो उठते हैं ?

२. हिमालय पर्वतारोहण संस्थान की जानकारी लिखो ।

३. लेखिका ने 'टाइगर हिल' से दिखाई देने वाले सूर्योदय का वर्णन किन शब्दों में किया है ?

४. 'घूम मॉनेस्ट्री' क्या है?

५. पर्यटकों को सिक्किमी, भूटानी एवं तिब्बती संस्कृति का मिला जुला रूप कहाँ देखने को मिला ?

६. भारत का हॉलैंड किसे और क्यों कहते हैं ?

भाषा की ओर

टोकरी में दिए गए कारक चिह्नों का प्रयोग करके तालिका पूर्ण करो तथा वाक्य बनाकर लिखो ।

को | से | ने | का/की/के | से | में/पर | अरे! | के लिए

खेल		मैदान		बच्चे भाग गए ।
सभी		मोहन		प्रशंसा की ।
मिट्टी		फल		आकार बनाओ ।
अरे! यात्री		थकान		शीघ्र नींद लग गई ।
बच्चों		जोकर		मन मोह लिया ।
माँ ने पौधे		गमले		लगाया गया ।
खेत		गेहूँ		बीज बोए ।
दीवार		चित्र		जगह बनाई ।

१. --------------------

२. --------------------

३. --------------------

४. --------------------

५. --------------------

६. --------------------

७. --------------------

८. --------------------